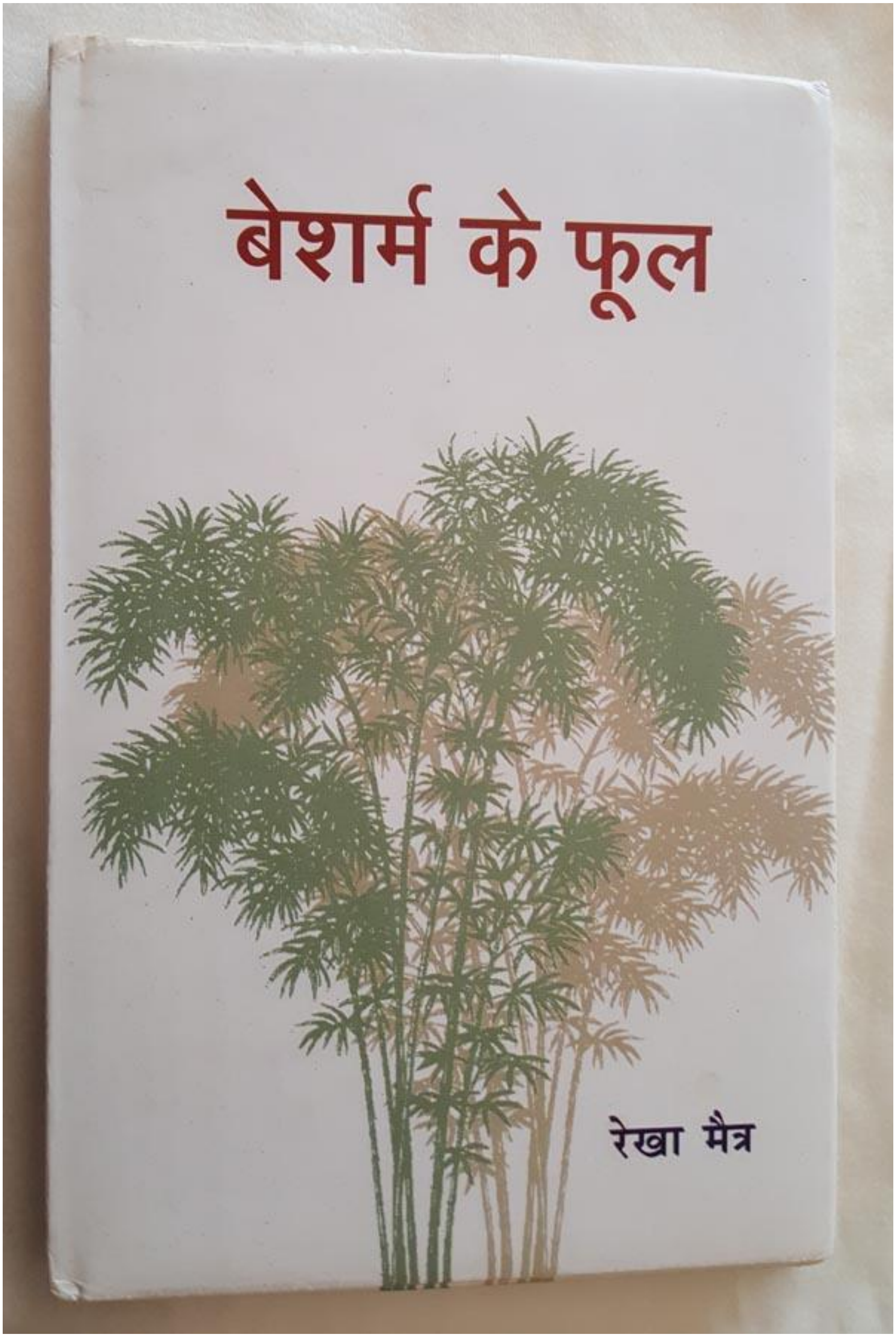
बेशर्म के फूल
रेखा मैत्र

आज की मीरा

कहानी में तो यही था
मीरा ने ज़हर का प्याला पिया
तुमने उसे अमृत बना दिया
कथा में कुछ छूटा सा रहता था
तुमने कहाँ, तुम्हारे प्यार ने
उस हलाहल को अमृत में
तब्दील किया था!
यानि तुमने उसे राणा के
मान-अपमान से परे कर दिया!

ज़रूर तुमने मुझे भी
मीरा सा प्यार दिया है
क्योंकि कोई भी अपमान
अब तक मुझे
भीतर से तोड़ नहीं पाया है!

आज की मीरा

कहानी में तो यही था
मीरा ने ज़हर का प्याला पिया
तुमने उसे अमृत बना दिया
कथा में कुछ छूटा सा रहता था
तुमने कहाँ, तुम्हारे प्यार ने
उस हलाहल को अमृत में
तब्दील किया था!
यानि तुमने उसे राणा के
मान-अपमान से परे कर दिया!

ज़रूर तुमने मुझे भी
मीरा सा प्यार दिया है
क्योंकि कोई भी अपमान
अब तक मुझे
भीतर से तोड़ नहीं पाया है!

आशियाना

आज तुमसे तुम्हारे नए
आशियाने में मुलाकात हुई!
तुम्हारे नीड़ को एक
नदी घेरे हुए दीखी!

नाम भी अजीब था उसका
कीचड़ वाली नदी कहते हैं उसको
नहीं, ग़लत कहा मैंने
सही ही था नाम उसका!

पता है तुम्हें?
कीचड़ में ही तो
कमल पनप पाता है
उसी कीचड़ में तुम्हारा
पंकज सा जन्म होना है!

अफ्रीका

गरीबी, भुखमरी और बीमारियाँ
अपना साम्राज्य फैलाए हैं यहाँ
फिर भी इन अफ्रीकियों की
काली, चमकीली आँखें
रोशनी से भरी दीखती हैं!

कौन सा जादू जानते हैं ये
जो फिर भी हँसते और गाते हैं!

ज़मीन ने जितनी भी
नाइंसाफी की हो इनके साथ
आकाश के केनवॉस पर बादल
रंगबिरंगे चित्र खींचता है यहाँ
प्रकृति चाहे ख्वाब ही
दिखाती है इन्हें
पर, बड़े चटख़ और शोख हैं
उन सपनों के रंग!

इसी से है इनकी उन्मुक्त हँसी
और है इनका बेजोड़ संगीत!

(अफ्रीका प्रवास के दौरान लिखी कविता)

अग्नि परीक्षा

'फ्लाइंग पर्च[1]' सा है
नारी का प्राण
आपने ही बताया था मुझे
तब आपकी धँसी हुई आँखें
अपने ही भीतर
देख रही थीं जैसे!
सच ही कहा था आपने
जितनी अग्नि परीक्षा
औरत झेल जाती है
और कोई जीव होता
तो ज़रूर दम तोड़ देता
कोई मछली[2] की तरह
स्थितियों के उबलते तेल से
उड़ कर अपने को
बचाए रखने की
प्राणपण कोशिश
फिर बचे न बचे
वो और बात है!

1. फ्लाइंग पर्च--एक प्रकार की मछली।
2. कोई माछ--बांग्ला भाषा में फ्लाइंग पर्च को कोई माछ कहते हैं। कहा जाता है कि कोई माछ आसानी से नहीं मरती।

अंतर्मुखी

अब मन लौटने लगा है भीतर की ओर
यात्रा का रुख बाहर से अंदर की ओर
बचपन में हर पल मन
बाहर ही दौड़ा करता था
खेल था कि ख़त्म ही नहीं होता
साँझ आते ही लगने लगता
कितना कुछ करने को था
और, दिन है कि ख़त्म हो गया!

अब लगता है—
जो कुछ करना बाक़ी है
उसके लिए बाहर रहना कहाँ ज़रूरी है?

मन की भीतरी तहों की
ज़रा-सी सफाई अब भी बाक़ी रहती है!

वक़्त कम है और काम है ज़्यादा
[illegible], अब बाहर जाना कम करूँ ज़रा!

अंतरिक्ष में स्नान

शून्य में लटकते-झूलते
ये बादलों के टुकड़े
एक बहुत बड़े नहाने के टब में
जैसे किसी ने ढेर सा साबुन घोला है!

लगता है, अगर कूद कर
वहाँ पहुँचा जा सके
तो बड़ा ही मज़ेदार
स्नान का कार्यक्रम रहे!

पर, कम्बख़्त विमान की
खिड़कियाँ खुलतीं भी तो नहीं!

अपना नंबर

तुम्हारे और दोस्तों के
फोन नंबरों पर अक्सर
उसकी उँगलियाँ घूमती रहतीं!

वो नंबर अनजाने ही
याद हो गए थे उसे
न खुद को कभी फोन किया
न खुद का नंबर याद हुआ!

इसी से दोस्तों को देखना-परखना
उनको गहराई से जानना
उसके लिए बड़ा सहज था!

दूसरों का ठिकाना
तलाशते-तलाशते
अपना ठिकाना
भूल गई लगी वो मुझे!

अरण्य स्मृति का...!

आज स्मृति के
अरण्य में तलाशा तुम्हें
तुम्हारे आज के
चेहरे से तुम्हारा पुराना चेहरा
एकदम मेल नहीं खाता!

किसी दूसरे इंसान की
तस्वीर सी लगी मुझे!

फिर याद्दाश्त को झाड़ा-पोंछा
गर्द साफ करके भी
कोई फायदा नहीं!

पुराने तुम मिले ही नहीं
लगता है उम्र के
बहते दरिया में
हमारे तन-मन सभी
धुलते-पुँछते रहते हैं!
हमें पता ही नहीं चलता!

सरहाने रखकर
बादलों का लिहाफ ओढ़ लूँ
फिर दुनिया की तमाम
तकलीफ़ों को उड़न-छू कर दूँ!

बहुरुपिया बादल

हर बार बादल एक अलग
रूप धर लेते हैं मेरे आस-पास!
कभी 'केयर बेयर' की तरह
मुझे गले लगाने को व्याकुल
अपनी बाँहें फैलाए
मुझे बुलाते-से
और कभी, नन्हे फरिश्ते बन
पंख लगाकर उड़ने को बेताब से!

कभी तो लगा है—
जैसे किसी धुनिए ने
ढेर सी रुई धुनक दी है
सारे आकाश के लिए
एक बड़ी सी रज़ाई
बनाने के ख़याल से

और...
अब, वहाँ इंद्रधनुष दीखा है
लगता है—
इंद्रधनुष का तकिया

बनबन का दीक्षांत समारोह

बनबन!
तुम तो लट्टू से
नाचते थे बचपन से
माँ तुम्हें खोने के डर से
अपनी गाँठ में बाँध कर
घूमने लगी थी, उसी उम्र से!

फिर कब तुम पाठशाला में
अपना सौरभ फूल की मानिंद
बिखेरने लगे, दूर-दूर तक
पता ही नहीं चला मुझे!

आज तुम्हारे दीक्षांत समारोह का
निमंत्रण जब मिला मुझे
लगा, मेरे पंछी ने डेने फड़फड़ाए हैं
बहुत ऊँचे उड़ने के लिए!

तुम्हारे उड़ान से लौटने की
प्रतीक्षा में पलकें बिछाए
हम सब बैठे होंगे!

तुम्हारी दिक्-दिगांतर की
ऊँचाई की आशीष है हमारी!

बेअसर ज़हर

कभी लगा था
लोगों के विष बुझे तीर
मुझे छूकर निकल जाते हैं
और मैं पूरी की पूरी साबुत
कैसे बची रहती हूँ!

कहीं मुझमें संवेदना की
कमी तो नहीं
जो मुझ पर उसका
कोई असर नहीं होता!

मेरी चेतना ने बताया
ऐसा है नहीं
मेरे आस-पास तुम्हारी
उपस्थिति गंगाजल धुले
मंत्र सी छिड़की हुई है।

वही मुझे उस यातना से
बेअसर करती चलती है।

बेशर्म के फूल

अजीब सा लगा था ये नाम
पहले जब सुनने में आया
उससे मिलने पर महसूस हुआ
बड़ी समानता थी, उन फूलों से उसकी!

ज़िंदगी ने तो उसे रौंद-रौंद डाला था
कभी हालात उसे रास नहीं आए
कभी वो हालातों को
हार तब भी नहीं मानी उसने
खिलती रही, इतराती रही
जैसे वो ज़िंदगी को
अँगूठा दिखा रही हो!

"मुझे कुचलो तो जानूँ
मैं हूँ बेशर्म का फूल!"

चेरी के फूल खिले

बहार आई है चेरी पर इन दिनों
इसकी पंखुड़ियाँ तमाम रास्तों को
राज पथ बना रही हैं इन दिनों
हल्के गुलाबी किनारे बनातीं सी
रास्ते को दोनों ओर सजातीं सी
दुल्हन एक गुज़री है मानो अभी यहीं से
जाते-जाते उसने ढेर से धान के
लावे फेंक दिए हैं अपने पीछे
ताकि पिया के घर जाने के
बाद भी मायके में समृद्धि बनी रहे!

छठवाँ तत्त्व

कैसे कहती मैं तुम्हें
ये देह पाँच तत्त्वों से बनी है
ये बहस का मुद्दा नहीं है
अपने-अपने तजुर्बे की कहानी है!

मैंने अक्सर, जिन स्थितियों से
खुद को गुज़रते पाया है
हादसे के बाद स्वयं को टटोला है
कहीं से टूटी-फूटी नहीं
जब कि मुझे मालूम है
तुममें से बहुतेरे
उन रास्तों से लौटते
अपनी किर्चियाँ बटोरते
मिले हैं मुझे!

तब मैं उस प्रभु की
शुक्रगुज़ार हो लेती हूँ
जो उसने मेरी मिट्टी में
पत्थर कुछ ज़्यादा ही
मिला दिए हैं
ताकि मुझमें मज़बूती बनी रहे!

चिड़िया

इस मटियाली इमारत में
चिड़िया भी सहमी
सहमी-सी घूम रही है!

गोया इसे भी डर है कि
कहीं इसे भी कैद
न कर लिया जाए!

अपने पंखों का अहसास
भूल ही गई है शायद!

चित्रकार

इस छोटे से तालाब को
अपना कैनवस बनाकर
आस-पास उगे दरख़्तों को
पानी पर ज्यों का त्यों उतार दिया तुमने!
जल पर पड़े बादलों के
बिंब को सुनहरी किरणों की
तूलिका से कुछ ऐसे आँका
जैसे किसी नौजवान ने अपने
केशों को हाईलाइट किया हो!

पोखर के चारों ओर खिले
'ब्लीडिंग हार्ट' कुछ यूँ दीखे
मानो महुए के फूलों ने
ढेर सी शराब पी ली है
उसके नशे से आँखें ही नहीं
समूचा जिस्म लाल हो आया है!

एक तुम हो जो पानी पर भी
चित्र खींच देते हो!
एक मैं हूँ जो काग़ज़ पर भी
नहीं उतार पाती!
अनोखे चित्रकार हो तुम...!

दर्द की पुड़िया

ये जिस्म है
या दर्द की पुड़िया
जहाँ देखो, वहीं दर्द!

अब तक के तजुर्बे ने
बताया है मुझे
अगर कहीं, कोई समस्या है
तो कहीं न कहीं निदान भी है

सो, दर्द निवारण पुड़िया की
तलाश मैंने अब तक नहीं छोड़ी!

दोस्ती

लगता है आज, बड़ी देर बाद
पेड़ों को हवाओं ने दुलारा है
कुछ दिनों से पेड़, गुमसुम से खड़े थे!

वासंती पवन से अवहेलित से, उदास से
आज दोस्ती हो गई है दोनों में
तभी तो पुरवइया
झूला झुला रही है उन्हें!

और, दरख्त भी
इतराए से झूम रहे हैं
दोस्ती के नशे में!

एक बरसाती दिन

सैर को जाते-जाते
रोज़ देखती, ऊँचे-ऊँचे
पेड़ों की आड़ से
सूरज को आते-जाते
नए-नए आकार बनाते
अनोखा सा शिल्प रचते!

आज वैसा कुछ नहीं था
मेघ का साम्राज्य जो था
बरसाती पानी में नहाई-धोई
जंगली मेहँदी धुली-निखरी
वृक्ष से आलिंगनबद्ध थी!

यकीनन उसने अपनी
खुशबू का उपहार
दरख़्त को देना चाहा होगा!

पेड़ की तो पेड़ जाने
उसने कितनी सुगंध ली
कितनी नहीं ले पाया
पर, मैंने अपना तन-मन
उससे सुवासित कर लिया!

एक जिया हुआ दिन

देखो तो आज पूरे
पाँच माह बाद हम सब मिले
इस बीच कितनी ही बार
कल्पना में, हम मिलते रहे
बतियाते रहे!

तुमने बताया कि मुलाकात के
एक दिन पहले से
तुम्हारी भूख ग़ायब, नींद ग़ायब
यानि तुम बेचैनी महसूस करते रहे!

आज हम चारों, पूरे समय
खेलते रहे, खाते रहे
बेमानी बातों पर
हँसते-खिलखिलाते रहे!

तुमने कहा कि आज
तुम ज़रूर कुछ लिखोगे
तुम्हारा तो पता नहीं
मैंने आज लिखी है
बहुत सारे दिनों बाद
एक जिए हुए दिन की दास्तान!

फालतू सामान

ये वो शहर था
जिसने उसे वर्षों पनाह दी थी
आज उसी जगह वो
दो गज़ ज़मीन को मोहताज था!

उसे अपना अस्तित्व उस पल
इंसान सा नहीं, सामान सा लगा
एकदम फालतू सामान-सा!

एक ऐसा माल-असबाब
जिसे उसके मालिक ने
बेहिफाज़त छोड़ रखा हो!

अब उसे याद आया
ग़ैर क़ीमती चीज़ों को तो
ऐसे ही फेंक दिया जाता है
फिर उसे इतनी हैरानी क्यों हुई?

शायद अपने क़ीमती होने के
अहसास को उसने अब तक
पकड़ रखा था!

गहराई दोस्ती की...!

अक्सर देखा है आजकल
किसी से विशेष प्रयोजन हुआ
बस दोस्ती गढ़ ली!

हमने तो दूर्बा के नन्हे
पौधों सी दोस्ती की थी
जितनी ऊपर दीखे
उतनी ही जड़ें भीतर हों!

तभी तो तीन दशक के
लंबे अंतराल में भी
टूटना तो दरकिनार
जड़ें भी नहीं हिलीं उसकी!

इलोना

इतिहास के पन्नों में
सभी बहादुरों को जगह नहीं मिलती
वो सूरमा जगह के मोहताज भी नहीं होते
तुम उन्हीं में से एक हो इलोना!

दूर देश तुम स्वयंवर रचाने
अकेली चली आईं
यानि अपनी जगह खुद बनाई!

सुनने में आया है
'नीला फूल' है तुम्हारे नाम का माने
किसी विदेशी भाषा में!

ज़रूर वो फूल सलोना रहा होगा
वैसी ही ध्वनि मिली
मुझे तुम्हारे नाम में
तुम्हारे व्यक्तित्व में
देखने में, फूल सा कोमल
और... सुगंध सा असरदार!

इमारत

कैलिफोर्निया की ये मटियाली इमारत!
ईंट की बनी होने से
इसके वासी भी अपने
अपने अहसासों को
पत्थरों में तब्दील करते से!

दीवारें अगर खोदो
चूने-गारे की जगह
यातना और पीड़ा ही दीखे!

यहाँ हर आने-जाने वाला
अजीब-सी घुटन समेटे
दिन काटता नहीं
दिन गिनता-सा दीखे!

इधर से गुज़रती
गाड़ियाँ भी दौड़ती नहीं
थमी-सी नज़र आएँ!

क्या आदमी की तरह

गाड़ियों ने भी इस
इमारत से दर्द का
रिश्ता बना रखा है!

इसकी खिड़कियाँ
हवा के लिए नहीं खुलतीं
रोशनी के लिए
बंद रहती हैं!

जंगली फूल

आज मैंने ढेरों जंगली फूल
इकट्ठा करके उनका सुन्दर
आकर्षक सा गुलदस्ता बना डाला!

सफेद, फालसई, बैंगनी और लाल
सबके सब खूबसूरत और खुशबूदार!

जंगल से घर तक आते-आते
पहले तो उनका सौंदर्य कुछ हलकाया
फिर सुगंध का भीनापन कमतर हुआ!

मन में एक महकता खयाल आया
क्या जंगली फूल वन के
खुले माहौल में ही महकते हैं?
और घरेलू फूल
घरवालों की देखरेख में!

स्वयं को सुगंधयुक्त
बनाने के लिए उन्मुक्त
वातावरण अनिवार्य है शायद!

जन्मदिन अनंत दा. का...!

आठ दशक जीवन के
पार किए आपने!
ढेरों उपलब्धियाँ
अपनी झोली में समेटे
जिनका लेखा-जोखा
या आपके पास है
या आपके प्रभु के पास!

मुझे भी मिला है
आपका आशीर्वाद
तब शिकागो
छूटने को था!

अपनी व्यस्तताओं और
पारिवारिक बीमारियों
के बीच भी आपने
हमें बुलाने का हठ नहीं छोड़ा!

शानदार खाने के साथ
एक सुंदर सा जर्नल
उपहार में दिया मुझे!

एक संदेश था
मेरे नाम उसमें
जर्नल को अपनी
कविताओं से भर दूँ!

आपका आदेश
सर-आँखों पर रखा
जर्नल को 'मुट्ठी भर धूप' में
तब्दील कर दिया!

एक और आशीर्वाद
चाहिए था आपसे
यदि कहीं मैं जीवन के
आठ दशक पार करूँ
तो आपके जीवट के साथ करूँ!

झीनी बदरिया

कभी तुम्हारे प्यार की
चाँदनी का उजाला हर पल
तन-मन से झरा करता था
इसी से तन-मन आत्मा सब उजले थे!

फिर कब न जाने कहाँ से
वक़्त की मैली बदली ने
सारा कुछ ढक-सा दिया!

लगने लगा, शायद यही
चिर स्थायी रूप रहेगा
सारी उम्र जीवन का!

पर नहीं एक नन्हे राजकुमार का
दीक्षांत तुम्हें शायद दीक्षा दे गया
और तुम, पहले से हो आए!

मेरी झोली ढेर से
सितारों से भर उठी
मुझे कहाँ पता था
वो बदरिया तो झीनी थी
चाँद आया और वो छँट गई!

जिजीविषा

कितनी जिजीविषा रही होगी मुझमें
ढेरों तूफान आए और गुज़रे
कभी मुझे कभी मेरे परिवार को ले डूबे
कभी तो मैंने अपना अस्तित्व
खंड-खंड बटोरते खुद को पाया है!
यानि अब भी बची रहती हूँ मैं!
ये सबूत है इस बात का
अब भी कुछ बाकी रहता है
मेरे पास देने के लिए!

कटा हुआ वृक्ष

तुम कटे वृक्ष सी
नहीं गिरोगी!
तुम्हारी जड़ें तो
भीतर बड़ी दूर
तलक फैली हैं!
तुम्हारी जिजीविषा ने
बताया है मुझे!
दरख़्त बेचारा भी
अपनी मर्ज़ी से
कहाँ गिरता है?
आदमी की कुल्हाड़ी ही
उसे अलग कर
देती है जड़ों से!
तुम उन कुल्हाड़ियों से
ख़ुद को बचाने की
ताक़त सँजोए रखना, बस!

कतरनें

अनुभूतियों की इतनी
रंगबिरंगी-रेशमी
कतरनें जमा हो गई हैं
सीना-पिरोना जानती तो
सुंदर सी कथरी सी डालती!

अगर काढ़ना आता
तो पैबंद के सुंदर नमूने काढ़ती
अपनी शानदार पोशाक बनाती
या उन्हें गीतों की लड़ियों में पिरोती!

इनमें से कुछ भी
न हो पाया मुझसे
सवाल है एक मेरे सामने खड़ा
इतनी सारी कतरनों का
आखिर, करूँ भी
तो करूँ क्या?

कत्थई गुलाब

तुम्हारे दिए गुलाब को
आहिस्ता-आहिस्ता सहला रही थी वो
जैसे तुम्हारे दिए कत्थई
घावों को मरहम लगा रही हो!

लगता था मन में कहीं
उसके एक द्वंद्व चल रहा था

बहुत प्यार से दिया गुलाब सही था
या तुम्हारी दी हुई ढेरों यातनाएँ?

उसके चेहरे को देख कर
मेरी ममता उसे बार-बार
बताना चाहती थी
इस पल का सच गुलाब ही है
पर, उसने क्या माना?
वो जाने!!

कविता

मैंने कब कहा है कि
कविता मेरा शौक है
वो मेरी दुखती रग ज़रूर है
कभी मन का कोई हिस्सा दुखा
तो कविता जनी
उसके जन्म के बाद
एक अजीब सा चैन
प्रसव पीड़ा के बाद की राहत!

लासवेगस

मरुभूमि के झुलसे हुए वृक्ष
चुनौती सी देते हैं मौत को
सूरज का तपता क्रोध झेलते
हवाओं की कड़ी थपेड़ें सहते
जीवित रखते हैं अपने अस्तित्व को!

जब सूरज डरा-धमका कर
इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता
तो पहाड़ अपनी गोद में
कहीं-कहीं हरिया देता है इन्हें!

धरती माँ की ममतामयी गोद होती
तो सबको एक सा लाड़-प्यार देती
पर्वत का पाषाण हृदय है
उसने किसी को अपना स्नेह दिया है
किसी को नहीं दिया!

(लासवेगस प्रवास के दौरान लिखी कविता)

मान का पान

वैसे तो मान से मिला पान
निहायत खूबसूरत तोहफा
बन सकता है!

क्या हो, जब तुमने
किसी को मान देने के
इरादे से पान की माँग की हो!
और जब तुम्हें
मना कर दिया जाए
उससे तुम स्वयं को क्या समझाओ?

क्या नाराज़ हो जाओ
उस व्यक्ति से जिसने
तुम्हें मना कर दिया है।

या शुक्रिया अदा करो
उसका जिसने तुम्हें अनजाने में
उस लत से बचाया है!

सो, मैं अहसानमंद हूँ तुम्हारी

जो तुमने मुझे बचा लिया!

शिकायत नहीं है तुमसे
क्योंकि तुमसे शिकायत
यानि खुद से शिकायत!

नन्ही तलैया

इस नन्हे से तालाब में
आज कुछ नहीं दीख पड़ता
खाली, ऊपरी सतह पर तरंगें ही तरंगें
भीतर का सब कुछ ढका-ढका सा
चलती-फिरती-तैरती मछलियों के
बुलबुले भी नहीं दीखते आज!

कहाँ गईं, वो पेड़ों की छायाएँ
अनगिनत फूलों की परछाइयाँ
आस-पास बसे मकानों के तैरते साए!

सिर्फ लहरों का सतह पर
झूम कर नाचना ही
नज़र आ रहा है मुझे!

कहीं ऐसा तो नहीं कि इन
उद्वेलित तरंगों से ये तलैया
अपने आस-पास के लोगों को
अपनी खुशी तो दिखाना चाहती है
पर ग़म को भीतर ही भीतर
समेट लेने का इरादा रखती है!

नींद

कई बार सोचा है–
पलकों के दोनों किवाड़ों को
बंद करते वक़्त एक तख़्ती लटका दूँ
बगैर इजाज़त अंदर आना सख़्त मना है
पर, मेरे बनाए नियम-कानून
जब मेरा मन ही न माने
तो और किसी को क्या कहूँ?

बाकायदा ऊल-जलूल बातें आती जाती हैं
बंद पलकों को धकिया कर खोलती रहती हैं!

नींद मुझसे कोसों दूर
खड़ी मुझे ताकती रहती है
जब ये सब फालतू लोग चले जाएँ
तभी तो वो आ पाए
और मुझे थपकी देकर सुलाए!

निर्माण की ओर फिर...!

ये तुम्हारी विश्लेषण की प्रकृति थी
या तोड़-फोड़ पर आमादा मन की
मुझको मालूम नहीं
पता है तो बस इतना ही
मैंने तुम्हें बचपन से ही
अपनी नन्ही-नन्ही उँगलियों से
टेप को अंत तक बाहर निकालते
और खुद को उन्हें पेंसिल से
भीतर डाल कर दुरुस्त करते देखा था!

इसी से आज जब सुना
तुम इमारतें बनाने की कला
सीख रहे हो इन दिनों!
मोटर-गाड़ियाँ ठीक करना
तुम्हारा शौक बन गया है!

तो मुझे एक ख़याल आया
ठीक इसी तरह विलासी राजाओं ने
खजुराहो निर्माण के बाद से
संन्यास की बात सोची होगी!

नियति

थकान से चूर
तपती देह लिए उदास
सूरज हर शाम
सागर के आँचल में जा छिपता है!

आकाश उसे पूरे
दमखम के साथ
हर सुबह भेज देता है
तमाम दुनिया से
मुकाबला करने!

चुनौती सा खड़ा
दोपहर की तपस
झेलता सोचता है वह!

आज नहीं जाएगा वो
सागर के आँचल तले
पर उसकी कोई मनमानी
नहीं चल पाती!

जाना ही होता है उसे
सागर के आमंत्रण पर
दोनों ही नियति है उसकी
दोनों को ही जीना होगा उसे
चाहे हो जीवन की भोर
अथवा हो शाम!

ओक भर चाँदनी

कल रात मैंने चाँदनी
छक कर पी ली
चाँद पिलाता रहा प्याऊ-सा
और मैं पीती रही प्यासी सी
मरुभूमि के ऊँट की तरह
इतनी सारी चाँदनी
अपने भीतर इकट्ठी कर ली
अब वो वक़्त बेवक़्त काम देगी
जब प्यास लगी
तृप्त हो ली!
चाँद का भी तो पता नहीं
कब कृपण हो आए!

पतंग

पतंग हूँ तुम्हारी मैं
पहले तो शानदार चटख़
रंग से तुमने सजाया मुझे

हवा में तुम्हारे
धागे के सहारे
ऊँचे बहुत ऊँचे
जब उड़ने लगी
अपने सौंदर्य पर
मन में इतराने लगी!

तभी अचानक
एक अदृश्य डोर आई
और मैं ज़मीन पर आ गिरी!

तब ख़याल आया
अरे, डोर तो मेरी
तुम्हारे ही पास थी!

पेड़ों का आतिथ्य

राह के दोनों ओर
लंबे-लंबे घने दरख़्त
अपनी परछाईं से रास्ते के
बीचोंबीच चटाई बिछाते से दीखे!

पेड़ों को न जाने कैसे
खबर मिल गई कि हम
कड़ी धूप में निकले हैं
सो, बेचारों ने हमारे
सुस्ताने की व्यवस्था कर दी!

अब हम उनसे कैसे कहते
हमें चलते रहना होगा
अभी रुकने की
कोई गुंजाइश नहीं है!

पर, हम दरख़्तों की
मेहमाननवाज़ी के
कायल हो लिए!

(केंटकी प्रवास के दौरान लिखी गई कविता)

फूल ट्यूलिप का...!

मरा हुआ ट्यूलिप का फूल लिए
तुम इधर से उधर घूमा किए
"क्यों मिट्टी पलीद कर रहे हो उसकी?
इसमें अब जान बाक़ी नहीं बची"
कहा मैंने–
पर तुमने मेरी बात सुनी ही कहाँ
पानी और फूलदान लिया
नन्हा सा ताँबे का सिक्का
फूलदानी में डाल दिया
कुछ देर बाद मरा फूल
तरोताज़ा हो आया!

लगा, मारने और बचाने, दोनों की
कला सुरक्षित है तुम्हारे पास!

पिंजरा

घिरा है चारों ओर
घटाटोप अँधेरा
तुम्हारा हाथ हिला-हिला
कर मुझे बुलाना
दूर एक पंछी का
डैने फैला कर
उड़ने की कोशिश करना
या तो उसके पंख आहत हैं
अथवा पाँव
वर्ना, कब का उड़ गया होता!

और मैं...?
देह के पिंजरे में कैद
तुम्हें महसूस तो कर पा रही
छू नहीं पा रही!

काश! मेरे आस-पास घिरी
घटाओं की छुअन ही
तुम्हें छू सके!

प्रकृति तुम्हारी...!

तुम्हारे रिश्तों का एक गुलदस्ता
देखा मैंने!
हैरान, परेशान, दिशाहारा उसे
देखती रह गई अवाक् सी!

पहले तो तुमने संबंधों के
महकते फूलों से सुंदर
सुवासित गुलदस्ता बनाया

बड़े जतन से सींचा, सँवारा, सजाया
उसे ज़्यादा ज़िंदा रखने को
रसायनिक खाद भी दी

फिर उसे दूर फेंक दिया
फूलदान की किरचें सब ओर बिखर गईं!

मुझे डर लगा, कहीं तुम लहूलुहान न हो जाओ
पर, तुम्हारी आँखों में कोई भय नहीं उतरा
लगा, यही तुम्हारी प्रकृति है!
पहले उन्हें सँवारना फिर फेंक देना!

प्रतीक्षा

देखा तो है मैंने कई बार
तुम्हें मेरे उम्र के दरख़्त पर
प्यार की नन्ही कलियाँ खिलाते
पर, उनके फूल बनने के पहले
तुम उन्हें तोड़ डालते!

मुझे इन्तज़ार है
उस कली का
जो फूल बन कर
देर तक महकती रहे
फिर चाहे तो
झर जाए पतझड़ में!

रेस

पहाड़ी के पीछे से
लुका छिपी खेलते से
हर सुबह सूरज को भागते
देखती थी बचपन से!

मेरे एक बाल सखा ने
बताया था मुझे
"देखती नहीं, कैसा लाल
मुँह है इसका!
जब हम खो-खो खेलते हैं
ऐसा ही चेहरा नहीं होता हमारा?"

तब से मैंने सूरज के साथ
अपना लाल चेहरा होने तक
भागना ही सीखा है!

वो हर बार जीता
मैं हर बार हारी
पर क्रम जारी रहा!

आज भी मेरी
सूरज के साथ
रेस जारी है!

कौन जाने कब
मैं जीत जाऊँ
कौन जाने कब
मैं सूरज बन जाऊँ!

रक्षाबंधन

सुबीर दा.!
मैंने तो सिर्फ एक बार
राखी बाँधी थी आपको
और आपने बहन की रक्षा का भार
अपने काँधों पर सलीब की तरह
उम्र भर के लिए उठा लिया!

कल की ही बात लगती है
बर्फ का तूफान
कड़कड़ाती सर्दी
और मैं अकेली

कमरे की खिड़की
मुझसे बंद नहीं हुई
तो नहीं ही हुई!

लाख कोशिश की
पर, परिणाम कुछ नहीं!

आपको बोलूँ या न बोलूँ

सोचते न सोचते मीठू का फोन
बताए बिना रह न सकी
डर था, खिड़की से कूदकर
कोई जो आ जाए
तो मेरा क्या बने?
परमात्मा ही जानें।

आप तभी दफ्तर से आए थे
दफ्तर के कपड़ों में
आप मेरे दरवाज़े!

खिड़की के पल्लों को हिलाना
मानो अंगद के पाँव को सरकाना
पर, आपने उसे बंद करके ही दम लिया!

आपकी नीली पड़ती उँगलियाँ
आज भी याद आती हैं
तो दिल दहल जाता है!

रंग दोस्ती के...!

दोस्ती पुरानी तो होती है
बूढ़ी नहीं होती!
जितनी पुरानी, उतनी ही खुशबूदार
ठीक पुराने चावलों की तरह
चावल पका है या नहीं
देखने के लिए चावल का
एक दाना टोहना काफी है
दोस्ती भी पकी है या नहीं
देखना हो तो देखो गाढ़े समय में
अगर रंग पक्का है दोस्ती का
तो छूटेगी नहीं
वर्ना कच्चे रंगों सी
बदरंग होती चली जाएगी!

रोशनी

कभी खुद पर हुए
बंद दरवाज़ों का
अहसास इतना गहराता है
आस-पास के खुले
रोशनदान और खिड़की की
मौजूदगी नज़र ही नहीं आती!

सो, मैंने अपनी
आँखों और दिमाग़ को
खुला छोड़ दिया है
ताकि कोई सूराख भी
मुझसे बच के न निकल पाए!

साक्षी

वो तकिया बेज़ुबान साक्षी था
तुम्हारी भोगी हुई यातनाओं का
उसने ही सुनी थीं तुम्हारी सिसकियाँ
वो जान जाता था
तुम्हारा खामोश क्रंदन!

तुमने उन दिनों कुछ
मंसूबे भी बनाए थे
आने वाले अच्छे दिनों के लिए!

कुछ योजनाओं को गढ़ा था
जो भविष्य में कार्यान्वित होनी थीं
वो तक़िया आज तुमसे
तुम्हारे अनजाने ही
एक सवाल करता है
"अब कैसे हो तुम?"

क्या तुम उसे बताओगे
बंधु अब सब सही जा रहा है।
खाली मेरी वेदनाएँ, आँसू
अब भी तकिए के नीचे दबे पड़े हैं!

संदूक में बंद प्यार...!

प्यार एक ऐसी नेमत है
जिसकी ज़रूरत सबको है
ऐसा ही सुना, ऐसा ही जाना
तुमसे मिलकर एक नया तजुर्बा हुआ

किसी-किसी को न तो
प्यार की ज़रूरत होती है
न उसे लेना ही आता है

सो, मैंने अपने प्यार को
मन के बक्से में बंद करके
हिफ़ाज़त से रख दिया है
ताकि जब तुम्हें ज़रूरत पड़े
ये कहीं खो न जाए!

शक्ति मंत्रों की...!

कैसे कहते हो तुम
भजन-कीर्तन सब ढोंग है
मंत्रों का संगीत
चुपचाप सुनो कभी
लगता है कहीं भीतर
जहाँ-जहाँ कचरा-कूड़ा
जमा पड़ा है अर्से से
मंत्र झाड़ू का काम
करते हैं वहाँ
सारा कुछ समेटकर
मन को झाड़-पोंछ कर
धुला-उजला कर डालते हैं
तब अंतर्मन शीशे सा
साफ हो आता है
और आत्मा का चेहरा
स्पष्ट हो उठता है!

शीतनिद्रा संबंधों की...!

कभी संबंध भी
शीतनिद्रा को
चले जाते हैं शायद
फिर स्मृति की ऊष्मा
पिघलाती है उन्हें
तो दोबारा जाग उठते हैं
और गहरी नींद से
जागे हुए मेढकों की तरह
उछल-कूद मचाते हैं।
वैसा ही हुआ कुछ
सुधा तुम्हारा याद आना...!

शिशु की साँसें

तुमने सुवासित गुलाबों के साथ
'बेबीज़ ब्रेथ' के नन्हे फूल मिलाकर
मेरा मातृ दिवस परिपूर्ण कर डाला एकदम
सच ही लगा कि इनमें मेरे
बच्चों की नन्ही साँसें घुल गईं जैसे!

दूर-दूर बसे मेरे बच्चे अब
अपनी आवाज से ही मुझ तक
पहुँचने की कोशिश सी करते हैं इन दिनों!

उनकी दूर से आती हुई आवाज़
मुझे कुछ ऐसी महसूस होती है
मानो वो अपने छोटे-छोटे हाथ-पाँव
मार रहे हों, मुझ तक पहुँचने के लिए!

और मैं...?
उन्हें महसूस तो कर पा रही
पर, छू नहीं पा रही!

सोडे की बोतल

सही कहा था तुमने
मेरी कविता सोडे की बोतल सी होती है
उद्‌गार बाहर आने को बेचैन

देखा तो होगा तुमने
उन बोतलों को
दबाव से उनका
मुँह बन्द किया जाता है

मेरी भी ज़ुबान
तभी बंद हो पाती है
जब मेरे भावों को
भाषा नहीं मिल पाती!

तब मेरी भी साँसें
उन शीशियों में भरे
सोडे की तरह
घुटती सी रहती हैं!

स्टेशन

रुकती हैं रेलगाड़ियाँ
मेरे घर के आस-पास
यात्रियों को लेतीं, सीटी बजातीं
रोज़ अपने नियमित समय से
गुज़रती चली जाती हैं!

कई बार कुछ बच्चे भी
अपने संबंधियों के साथ
उत्सुकता से उसे
देखते खड़े होते हैं!

इनके गुज़रने के साथ-साथ
दिमाग़ में एक ख़याल
चलता चला जाता है!

मुझे भी क्या कभी
इनमें से कोई रेलगाड़ी
मेरे गंतव्य स्थल तक
ले जा सकेगी?

मैं प्लेटफॉर्म पर खड़ी सोचती हूँ
असीम तक क्यों कोई भी
रेलगाड़ी नहीं जाती
ताकि मैं उसमें सवार हो जाती!

सुख का गणित

अंकों से यूँ तो मेरी
दुश्मनी पुरानी थी
परीक्षा में पास होने के
अलावा एक भी अतिरिक्त
अंक कभी पाया नहीं!
फिर भी एक ख़याल था
छिपा कहीं कोने में
जीवन के सुख का गणित
ठीक-ठीक करूँगी!
तब तो सोचा ही नहीं
गणित तो गणित है
चाहे हो अंकों का
चाहे हो सुखों का!

तल्ख़ियाँ

भूल जाना चाहती थी
वो तल्ख़ियाँ ज़माने की
हुआ यूँ है कि अब वो
भूलने लगी ज़माने को!

कुछ अच्छे किरदारों को
कुछ खुशनुमा नज़ारों को
रड़कन ही सही वो आँखों की
अब उनको याद भी रखना होगा

ताकि कुछ हसीन चेहरे
कुछ यादगार तजुर्बे
कई अच्छे पल-छिन
महफूस रह सकें जेहन में!

ठिकाना

तुम पूछते हो मेरा ठिकाना
मैं हूँ आँधी में उड़ा तिनका
तूफान आया तो तिनका उड़ा
और थमा तो वो रुक गया
कभी लम्बे समय तक
ये स्थिर रहा अगर
तो मैं भी वहीं बस जाऊँगी
न हुआ, तो तूफान को ही
अपना घर बना लूँगी!

तुमसे क्षमा माँगते हुए...!

सुना था मैंने–
चौरासी लाख जन्म के बाद
आदमी का जन्म मिलता है हमें!

तुम्हीं बताओ मुझे–
इतने सारे जन्मों में
क्या ताक़त जमा
करता रहता है जीव?

फिर तुम–
उसे छोड़ देते हो
इस जहाँ में, इंसान के रूप में
नरक यंत्रणा सहने
शारीरिक और मानसिक दोनों!

ये तो इंसानी जिगर है
जिसने तुम्हें कभी मंदिर में
उच्च सिंहासन पर बिठाया
कभी मस्जिद में तुम्हारी दुआएँ कीं
गिरजे में तुम्हारे नाम की

मोमबत्तियाँ सुलगाईं
और कभी गुरुद्वारे में
तुम्हारे शब्द कीर्तन गाए!

कहीं ये विश्वास का
छतनारी दरख़्त तो नहीं
जो साए का खाली अहसास है
और, उसने सिर्फ इसलिए गढ़ा है
ताकि यातना का समय
थोड़ा कम लंबा लगे!

कुछ भी यदि
तुम्हारी शान के खिलाफ़ हो
तो क्षमा करना मुझे
क्योंकि ये भी तो
इंसान ही ने कहा है न कि
पीड़ा जब इतनी बढ़े
कि वो झेल न सके
तो तुम उसे गोद में उठा कर
उसकी पीड़ा खुद झेलते हो!

उपहार

क्या उपहार दूँ?
तुझे तेरे जन्मदिन पर
उम्र के इतने सारे वर्षों में
कौन-सा उपहार दे पाई तुझे?

हाँ तूने ज़रूर दे डाला
मुझे बेशकीमती तोहफ़ा!

सान्टा के मोज़े में
सिमटा-लिपटा चला आया
मेरे पास, मेरे नन्हे की सूरत में
क्रिसमस का अनमोल
उपहार बनकर!

देने को मेरे पास हैं
चंद दुआएँ
तू चमकते सितारों सा
अपना उजाला फैलाए
और इस परिवार का
नाम रोशन करे!

जितने अँधेरे बिखरे हैं
इन दिनों मेरे आस-पास
अपनी कीर्ति के उजाले से
सबको समेटता चले!

वर्तमान

उसके साथ तुम्हारे रिश्ते
झनझना कर नहीं टूटे
काँच की तरह!
हलाल होते रहे
निरीह पशु की तरह!

पत्नी का सम्मान
तुम्हें शायद ही मिला हो
फिर पता नहीं कैसे
एक नन्हा-सा राजकुमार
आ गया तुम्हारी गोद में!

उसको सजाते-सँवारते
अपने अधिकार की बातें
भूलने लगीं तुम धीरे-धीरे
और तुमने भुलाने के
कुछ साजो-सामान भी
इकट्ठे कर लिए!

धूल-धूसरित पुराना सितार
पुराने दोस्त-सा काम आया

उसके सिसकते सुर
कुछ नए संगी-साथी भी
जमा कर गए!

तुम्हारी कविता ने भी
कुछ हद तक सहेली
बनकर तुम्हें बिखरने
टूटने से बचाया!

कल जब वही राजकुमार
जिसे तुमने अपने
खून से सींचा था
तुम्हारे मन को कड़वा गया
तब तुम्हारे सब्र का बाँध टूट गया!

उस सैलाब में
तुम्हारा सारा
अतीत बह गया!

अब बचा है वर्तमान
जिसे अब तुम्हें
समेटना है
धीरे-धीरे
सोच-सोच कर!

विडंबना इस देश की...!

मैंने तुम्हें, उसे और स्वयं को
अक्सर इस देश की
धज्जियाँ उड़ाते देखा है!

आज वर्षों बाद मुझे लगा
एक अर्सा पहले ये
हमारी ही अपनी
चुनी हुई राह थी!

बेचैन नहीं था
ये देश हमारे बिना।
हमने जो यहाँ पाया है
उसके लिए जी तोड़ मेहनत की!

जो छूट गया हमसे
उसके लिए हमने
उतनी ही मेहनत
क्यों नहीं की!

वियतनामी वृद्धा—मिन्ह ओ टॉम

मिन्ह!
तुम अक्सर ही मुझे
सुबह सैर के समय मिलतीं
हमारे अभिवादन का आदान-प्रदान होता

फिर हम अपनी-अपनी दिशा ले लेते
न तुम मेरी भाषा जानो
न मैं तुम्हारी समझूँ
सो, बस संपर्क इतना ही रहा!

आज अचानक तुमने मुझे रोका
खींचती अपने घर तक ले गईं
न, अपने नहीं, अपने बेटे के घर ले गईं!

इशारे से मुझे समझाया
पाँच दिन बाद तुम
वियतनाम चली जाओगी
और, बाकी सारा तुम्हारे आँसुओं ने बताया!

तुमने मुझे एक नंबर पकड़ाया
नंबर लगाने पर मशीन ने बताया

ये नंबर अब बदल गया है
बदले हुए नंबर की
कोई सूचना नहीं थी वहाँ!

मेरे भीतर एक दहशत रेंग गई
कहीं ऐसा तो नहीं
जब तक तुम वियतनाम पहुँचो
वहाँ का पता भी बदल जाए!

दोस्त!
तुमने तो मुझे नंबर पकड़ा दिया
अब मैं तुम्हें कौन सा उत्तर पकड़ाऊँ?

❑❑❑

विद्युत का चमकना, मरुभूमि में...!

अजीब सा नज़ारा देखा है
इस मरुभूमि में!
प्रकृति का क्रोध तो देखा था
बिजली के कड़कने की सूरत में
पर, आज उसका सहमना देखा!

रेगिस्तान में जाने से
वो भी काँप-काँप जाती है।
लैंप की मद्यम रोशनी की तरह
हल्के से चमकती है!

कहीं डर तो नहीं रही
विद्युत भी यहाँ?
कौन जाने कब मरुभूमि
इसे भी डस ले
और इस बार प्रकृति से
अपना प्रतिशोध ले ले!

पर, रेगिस्तान की भुरभुरी
ज़मीन इस पर रहम कर
इसे छोड़ ही देती है।

(लासवेगस प्रवास के दौरान लिखी कविता)

व्यक्तित्व वाशिंगटन का...!

इस शहर का अपना अलग वजूद है!
ये तुम्हें एकदम से गले नहीं लगाता
निरखता, परखता दूर से निहारता
जैसे तुम्हारी मीमांसा करता सा!

शिकागो सा शिशु सुलभ मुस्कान लिए
पहली ही बार में खेलने बतियाने
तुम्हारे दरवाज़े नहीं चला आता!

पहले, इसके कुछ अलग फूल-पत्ते
कुछ रंग-बिरंगे अनोखे पंछी
तुम्हारे पास आते, तुम्हें लुभाते

फिर इसके बाशिंदे माप-तौल कर
अनुभवी, सधी-सी मुस्कान लिए
अपना दोस्ताना हाथ बढ़ाते हैं!

सो, इनमें तजुर्बे के पक्के रंग हैं
बचपन के कच्चे रंग नहीं हैं शायद!

ज़िद

अपनी अलग पहचान की भूख
उसमें थी ही नहीं कभी
तुम्हारे साए-सा व्यक्तित्व उसने
हँसते-हँसते स्वीकार लिया तभी!

पर, जब उसने तुम्हारे
चेहरे पर एक ऐसा भाव देखा
जिसने उसे बताया कि
तुम्हारा ख़याल था
तुम्हारे बिना अलग उसका
कोई वजूद है ही नहीं!

तब से उसे एक अलग
पहचान की ज़िद सी पैदा हो गई!
सही या ग़लत, पता नहीं!